IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र : सामाजिक संदर्भ और महत्व

डॉ. विशेश्वर रविदास[1], डॉ. सुरेश प्रसाद दांगी[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभागाध्यक्ष,

[2]सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग

जुबिली महाविद्यालय, भुरकुंडा, झारखण्ड

bisheshwar78@gmail.com

सारांश

हिन्दी कहानी का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भिक कहानियों में नैतिक शिक्षा और मनोरंजन का उद्देश्य प्रमुख था। भारतेन्दु युग में गद्य साहित्य को नई दिशा मिली, परंतु कहानी विधा को वास्तविक रूप से पहचान द्विवेदी युग और उसके बाद प्राप्त हुई। इस काल में समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना और यथार्थ चित्रण पर बल दिया गया। धीरे–धीरे कहानी मनोरंजन से आगे बढ़कर सामाजिक जीवन का दर्पण बन गई। इस दिशा में हिन्दी कहानी के विकास में मुंशी प्रेमचन्द का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहानी को यथार्थवाद की मजबूत भूमि प्रदान की। उनकी कहानियाँ जैसे 'पूस की रात', 'ईदगाह' और 'कफन' भारतीय ग्रामीण जीवन, गरीबी, शोषण और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। प्रेमचन्द ने सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग कर सामान्य जन के जीवन को साहित्य का केंद्र बनाया। एक कहानीकार के रूप में प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को नई दिशा, गहराई और सामाजिक सरोकार प्रदान किया। इस प्रकार हिन्दी कहानी के इतिहास में उनका स्थान अत्यंत सम्माननीय और प्रेरणादायक है। प्रस्तुत लेख प्रेमचन्द की कहानियों के पात्रों और उनके महत्व के विश्लेषण का एक प्रयास है।

कीवर्ड– हिन्दी साहित्य, कहानी, उपन्यास, कहानीकार, यथार्थवाद, मुंशी प्रेमचन्द।

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के ऐसे महान कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज के यथार्थ स्वरूप को सजीव रूप में प्रस्तुत किया। उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है, परंतु उनकी कहानियाँ भी उतनी ही प्रभावशाली और समाजोन्मुखी हैं। इसीलिए हिन्दी कहानी लेखन में मुंशी प्रेमचन्द का गौरवपूर्ण स्थान है। एक कहानीकार के रूप में वे विख्यात हैं। प्रेमचन्द के कथा–साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उनके पात्र हैं। ये पात्र केवल कल्पना की उपज नहीं, बल्कि भारतीय जनजीवन की धड़कन हैं। किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, बच्चे, बूढ़े, मध्यमवर्गीय कर्मचारी–हर वर्ग उनके साहित्य में बोलता हुआ दिखाई देता है।

उन्होंने 302 कहानियाँ लिखी हैं जो उनके विभिन्न कहानी संग्रहों में मौजूद हैं। उनके कहानी संग्रहों में प्रमुख हैं–प्रेम प्रतिभा, प्रेमतीर्थ, प्रेम पीयूष, प्रेमकेश, प्रेम पूर्णिमा, प्रेम प्रसून, नवनीधि, प्रेमदर्शनी, प्रेम पच्चीसी, प्रेम चतुर्थी, मनोविनोद, समरयात्रा, सप्तसरोज, अग्नि समाधि, प्रेमगंगा, सप्त सुमन, मानसरोवर 8 भाग, नारी जीवन की कहानियाँ, ग्राम जीवन की कहानियाँ, कुत्ते की

DOI: 10.48175/IJARSCT-31092

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

कहानी, जंगल की कहानी, प्रेम प्रमोद, प्रेमसरोवर, प्रेम पंचमी, प्रेरणा गल्पगुच्छ, जवजीवन, पचफूल, मृतक भोज, कफन आदि। प्रेमचन्द जी ने जिस समय हिन्दी के क्षेत्र में पदार्पण किया, उस समय हिन्दी का उषा काल चल रहा था। लोगों में पुनर्जागरण हो रहा था तथा साहित्य में उसी से आधारित रचनाओं की रचना हो रही थी। तो भला प्रेमचन्द जी अपने आप को उससे कैसे बचा पाते। विषय की दृष्टि से प्रेमचन्द जी की कहानियाँ मुख्यतः सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों से सम्बंधित थी। समाज की सीमा में ग्रामीण और नगर के क्षेत्र आते हैं। दोनों ही क्षेत्रों को लेकर उनकी कहानियाँ लिखी गई है। राजनीतिक विषयों में से प्रायः वे सभी विषय आ गये हैं जो भारतीय राजनीतिक के तत्कालीन ज्वलन्त प्रश्न थे। इसके अलावा आर्थिक क्षेत्र से आधारित भी कहानियाँ लिखी गई हैं। प्रेमचन्द ने कुछ सामाजिक, राजनीतिक और कुछ आर्थिक कहानियाँ लिखी हैं जो इस प्रकार हैं।

बेमेल विवाह, दहेज की कुप्रथा, पुरुष की अनेक शादियों की स्वच्छन्दता, बाल–विवाह, गरीब और अमीर का विवाह, वेश्याचार, लड़कियों को बेचना, जुआ, नशेबाजी, छुआ–छूत, जात–पाँत, ठाकुरों का अत्याचार, किसानों की मजबूरी, मंदिर में प्रवेश न मिलना, पारिवारिक झगड़े, संयुक्त कुटुम्ब की भावना, पारिवारिक दुःख, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, शहरी तथा ग्रामीण जीवन का तालमेल, निम्न जाति की स्त्रियों की पीड़ा, नारी–शोषण, अंधविश्वास, यौन शोषण, पारिवारिक विघटन, प्रेम संबंधी कहानियाँ, खोये हुए संबंध, पुरुषों का विदेश जाकर पत्नी को भूल जाना, डॉक्टर की लापरवाही, अमीरों का गरीबों की मदद न करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना आदि विषयों को केन्द्र में रखकर भी प्रेमचन्द जी ने सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं।

इसी क्रम में प्रेमचन्द जी ने आर्थिक एवं राजनीतिक कहानी में गरीबी, बेकारी, किसानों की समस्या, जमींदारी प्रथा की बुराइयाँ, पराधीनता, पोषित अन्य कहानियाँ, स्वतंत्रता आन्दोलन, दासता, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, देशभक्ति की भावना प्रधान तथा देश की राजनीतिक पर व्यंग्य प्रधान कहानियों का जिक्र इस श्रेणी में कर सकते हैं।

नौकरी के लिए शहरों में जाना, लगान की वजह से सूद का बढ़ना, किसानों की पीढ़ी दर पीढ़ी का ऋण के बोझ में दबे रहना, पैसों की तंगी के कारण खेतों को कम दामों में बेचना, किसान का मजदूर बनना आदि से संबंधित कहानियों को आर्थिक स्थिति के अन्तर्गत ले सकते हैं।

भाषा पर प्रेमचन्द की पकड़ और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ

प्रेमचन्द की कहानियों में हिन्दी तथा उर्दू में अनूदित कहानियाँ ज्यादा हैं। प्रेमचन्द एक प्रसिद्ध कहानीकार एवं लेखक थे। उन्होंने अपने लेखन कार्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है और यह इसलिए सम्भव हो सका क्योंकि वे भारतीय संस्कृति को बड़ी गहराई से जानते थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति की उस सच्चाई को उजागर किया जिसे लोग जानते हुए भी अनजान बने रहे थे। इस बारे में शिवकुमार मिश्र का मत है कि– "प्रेमचन्द जब कथा के मंच पर आए, भारत की अपनी कथा परम्परा से तो परिचित थे ही, उर्दू और अरबी–फारसी के किस्सों और अफसानों की भी उनको पूरी जानकारी थी। पश्चिम के कथा लेखकों को भी उन्होंने पढ़ा था। बावजूद इसके उनकी रचनाएँ कथा लेखन के किसी निश्चित रूप में ढलने के बजाय अभिव्यक्ति के उनके अपने दृष्टिकोण की अनुकूलता में सामने आईं कि कहानी को पारदर्शी होना चाहिए, वह सारगर्भित हो और अपने संवेदनात्मक उद्देश्य को पाठक तक भली भाँति संप्रेषित कर पाने में समर्थ हो।

डॉ. रामविलास शर्मा प्रेमचन्द के कहानी कहने के ढंग पर विचार करते हुए लिखते हैं कि "कहानी फुरसत की चीज है, काम धाम से छुट्टी पाकर सुनने की चीज है और जल्दबाजी से काम बिगड़ जाता है। प्रेमचन्द कहानी सुनाते हैं, अक्सर लच्छेदार जबान में, वाक्यों को स्वाभाविक गति से फैलाने की आजादी देकर। अंग्रेजी बाग के माली की तरह उनकी डालियों और पत्तों को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

कतर कर नहीं, फूलों और पत्तियों को हवा में बढ़ने और लहराने की आजादी देकर। जिंदगी के अनुभवों पर टीका–टिप्पणी भी साथ में चला करती है, व्यंग्य, अनूठी उपमाएं और हास्य बीच–बीच में पाठक को गुदगुदाते रहते हैं।"

प्रेमचन्द की कहानियों का क्षेत्र इतना विशाल और व्यापक है, तदुपरांत उनकी कहानियों के पात्र इतने विविध एवं सच्चे हैं कि उनकी कहानियाँ तत्कालीन उत्तरी भारत विशेषतः हिन्दी भाषी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व बन गईं। प्रेमचन्द ने पश्चिम के कथा लेखकों का अध्ययन किया था इसलिए वे जानते थे कि पाश्चात्य संस्कृति कितनी आगे बढ़ गई है। हमारे देश की रूढ़िगत परम्पराओं को उन्होंने बखूबी अपनी कहानियों के माध्यम से तोड़ा है। इसी कारण हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द में नवजागृति का संचार हो गया है। इसी नवजागरण की वजह से प्रेमचन्द ने अपनी सभी कहानियों में भारत के रूढ़िगत नियमों को तोड़ने का प्रयत्न किया है। चाहे वह बाल विवाह, छुआ–छूत, नारी–निर्मम, या अंधविश्वास ही क्यों न हो? उन्होंने समाज के हर पहलू को उजागर करने का प्रयत्न किया है। प्रेमचन्द की कहानियों पर नवजागरण का पूर्णतः प्रभाव हमें देखने को मिलता है।

छुआछूत का विरोध करती कहानियाँ

प्रेमचन्द के समय में हमारे देश का सामाजिक ढांचा अंधकारमय था। लोग आपस में भेदभाव रखते थे। वैदिक काल में ऋषिमुनियों ने समाज की व्यवस्था स्थापित करने के लिए वर्णव्यवस्था की रचना की थी जिसमें कर्मव्यवस्था के आधार पर चार वर्ण बनाए गये थे। ब्राह्मण (वे लोग जो वेदों का उच्चारण कर सके) क्षत्रिय (वे लोग देश की रक्षा कर सके) वैश्य (वे लोग जो व्यापार करें) शूद्र (वे लोग जो इन तीनों वर्णों की सेवा करें)। उस समय ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण या शूद्र का बेटा शूद्र ऐसा नहीं था। शूद्र का बेटा अगर अच्छा पढ़ लिख सकता है तो वह ब्राह्मण कहलाता था। वैदिक काल के बाद इस वर्णव्यवस्था में जड़ता का समावेश हो गया और इसी के साथ भारत की दुर्गति होनी शुरू हो गई। अब समाज में वर्ण के आधार पर तय न करके, उनके पूर्वजों के वर्ण यानी जाति के आधार पर तय किया जाने लगा। इसमें ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण, क्षत्रिय का बेटा क्षत्रिय तथा वैश्य का बेटा वैश्य और शूद्र का बेटा शूद्र कहलाने लगा। इसी के साथ साथ समाज में एक कुप्रथा प्रचलित हुई और वह थी 'छुआछूत'। इस प्रथा ने भारतीय समाज को अन्दर से खोखला कर दिया था। ब्राह्मण अब शूद्र को नहीं छूते और न ही उनको इज्जत देते थे। अगर शूद्र की परछाई भी ब्राह्मण के ऊपर पड़ जाती थी तो वे फिर से नहाते थे, तो फिर हाथ का खाना खाने की बात तो बहुत दूर की है। किसी भी पवित्र स्थान पर उनका प्रवेश निषेध था। गाँव में उनको दूर एवं गन्दे इलाके में रहने की जगह मिलती थी। इन निम्न वर्गों के लोगों को ब्राह्मण हमेशा धर्म के नाम पर डराते थे तथा दबाते थे और निःशुल्क अपना काम निकलवाना चाहते थे। काफी लंबे समय तक यह शोषण चलता रहा पर 1857 के विद्रोह के बाद लोगों में इन परम्परागत रीतिरिवाजों के विरुद्ध पैदा करने के लिए प्रेमचन्द ने साहित्य को माध्यम बनाया। प्रेमचन्द ने इस प्रथा का विरोध करने हेतु तथा निम्न वर्ग को उनके अधिकार दिलाने के उद्देश्य से ऐसी कहानियों की रचना की जहाँ इन प्रथाओं का खुलकर विरोध हुआ है। इसके साथ स्वर्ण के लोगों का किस तरह भेदभाव भूलकर निम्नवर्ग के लोगों को अपनाना चाहिए इसके उदाहरण भी दिए गये।

जनमानस की आकांक्षाओं के चित्रकार

प्रेमचन्द भारतीय जन मानस की स्थितियों, इच्छाओं, विषमताओं और आकांक्षाओं के कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने युग जीवन का जितना सच्चा यथार्थवादी चित्रण किया है उतना हिन्दी का अन्य कोई लेखक नहीं कर सका है। उनका साहित्य जन–जीवन की विविध विषमताओं, विडम्बनाओं और समस्याओं के चित्रण से भरा पड़ा है। प्रेमचन्द का दृढ़ विश्वास है कि लेखक एक जागृत प्रहरी होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

अतः उसका उत्तरदायित्व तो अपनी लेखनी के हथियार के माध्यम से समाज को सही राह दिखाना है। इसी वजह से अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उन्होंने समाज की समस्याओं तथा गरीबों एवं शोषकों की लाचारी एवं मजबूरियों को अपने साहित्य के माध्यम से शिक्षित व्यक्तियों के समक्ष रखी है।

इसी संदर्भ में डॉ. एम. विमला कहते हैं कि – "प्रेमचन्द अपने कथा साहित्य में सामाजिक कुरीतियों के साथ–साथ आर्थिक विषमता और राजनीतिक परिस्थितियों का जो चित्रण किया है, वह मानव मन तक पहुँचकर उसे इन कुप्रथाओं का विश्लेषणात्मक विचार कर अपने जीवन को रूपान्तर करने को विवश करता है। प्रेमचन्द अपनी कलम के प्रभाव से ही जीवन का परिवर्तन करना चाहते थे और यह कार्य करने में अत्यन्त सफल भी हुए। प्रेमचन्द ही प्रथम कलाकार थे, उन्होंने जीवन और समाज का सच्चा रूप संसार को प्रदान किया।"

प्रेमचन्द के पात्रों की विशेषताएँ

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के महान कथाकार थे। उनकी कहानियों के पात्र आम जनजीवन से लिए गए हैं–किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, बच्चे, बूढ़ेकृजो समाज की सच्चाइयों को उजागर करते हैं। उनके पात्रों का महत्व इसलिए है क्योंकि वे यथार्थ, संवेदना और सामाजिक परिवर्तन का संदेश देते हैं।

प्रमुख पात्र और उनका महत्व

मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों के प्रमुख पात्रों के महत्व को रेखांकित करने के लिए अनेक सशक्त उदाहरण दिये जा सकते हैं।

1. 'ईदगाह' कहानी में हामिद एक गरीब और अनाथ बालक है जो अपनी दादी के साथ रहता है। वह मेले में जाकर अन्य बच्चों की तरह अपने लिए खिलौने नहीं खरीदता, बल्कि अपनी दादी के हाथों को रोटी पकाते समय जलने से बचाने के लिए चिमटा खरीदता है। इस प्रकार हामिद त्याग, संवेदना और पारिवारिक प्रेम का प्रतीक के रूप में हमारे सामने प्रकट होता है और गरीबी में भी उच्च नैतिकता का उदाहरण बनता है। वहयह सिद्ध करता है कि सच्ची खुशी दूसरों की सेवा में है।
2. 'पूस की रात' कहानी में ज़मींदार के कर्ज़ में डूबा हुआ एक गरीब किसान गरीबी से जूझता है और भयानक ठंड से बचने के लिए खेत छोड़कर चला जाता है जिससे फसल नष्ट हो जाती है। कहानी ज़मींदारी प्रथा की क्रूरता का उद्‌घाटन करती है और सामान्य किसानों की दयनीय स्थिति और शोषण को दर्शाती है। हल्कू केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उस समय के लाखों किसानों का प्रतिनिधि है।
3. 'कफन' नामक कहानी में घीसू और माधव नामक पिता–पुत्र दोनों ही आलसी और स्वार्थी होते हैं जो माधव की पत्नी की मृत्यु के बाद उसके कफन के पैसे भी शराब में उड़ा देते हैं। इस कहानी में अत्यधिक गरीबी और सामाजिक विडम्बना का मार्मिक चित्रण किया गया है। कहानी सामाजिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य है जिसके माध्यम से मानवीय पतन का करुण चित्रण किया गया है। इसके साथ ही यह कहानी यथार्थवाद की चरम अभिव्यक्ति भी है।
4. 'नमक का दरोगा' शीर्षक वाली कहानी में वंशीधर का एक ईमानदार अधिकारी के रूप में चित्रण हुआ है जो कि सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपरायणता का आदर्श प्रतीत होता है। एक ईमानदार अधिकारी की कहानी, जिसका नायक रिश्वत नहीं लेता है,

किन्तु अंत में उसकी ईमानदारी की जीत होती है। इससे सत्य और नैतिकता की स्थापना के साथ ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध संदेश देने का सशक्त प्रयास है।

5. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में अनारकली (या बहू) का पात्र सहनशील और समझदार स्त्री का रूप है, जिसके माध्यम से परिवार में एकता का महत्व और एक स्त्री की नैतिक शक्ति को दर्शाया गया है जहाँ पारिवारिक कलह को शांत करने में नायिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यहाँ पर स्त्री की सहनशीलता और विवेक का प्रदर्शन है और परिवार में एकता स्थापित करने की एक स्त्री की शक्ति दिखती है।
6. 'बड़े भाई साहब' का छोटा भाई नामक कहानी में छोटा भाई चंचल और स्वाभाविक बालक है, जबकि बड़ा भाई अनुशासनप्रिय और गंभीर है। शिक्षा प्रणाली पर इस व्यंग्य में बाल मनोविज्ञान का सजीव चित्रण किया गया है और स्वाभाविक प्रतिभा और रटने की प्रवृत्ति का अंतर स्पष्ट होता है।
7. 'पंच परमेश्वर' के जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता व न्याय के बीच संघर्ष दिखाया गया है। जब जुम्मन और अलगू पंच बनते हैं, तो वे निष्पक्ष निर्णय देते हैं। कहानी के पात्र न्याय की सर्वोच्चता, पंचायत व्यवस्था की गरिमा और नैतिकता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।
8. 'सद्गति' कहानी का नायक दुखी एक दलित और शोषित पात्र है जिसके माध्यम से प्रेमचन्द ने समाज के निम्न वर्गों की पीड़ा को भी स्वर दिया। दुखी नामक पात्र ब्राह्मण के लिए काम करते करते मृत्यु को प्राप्त होता है और उसकी यह कहानी जातिगत भेदभाव की कठोर सच्चाई सामने रखते हुए सामाजिक अन्याय की आलोचना करती है।
9. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में गंगी के द्वारा अपने बीमार पति के लिए ठाकुर के कुएँ पर जाने और पानी लेने का प्रयास दर्शाते हुए छुआछूत की समस्या दिखाई गई है जहाँ पर नायिका साहस और आत्मसम्मान का प्रतीक है।

नैतिक आदर्श और यथार्थ का संतुलन

प्रेमचन्द के पात्रों में दो धाराएँ दिखाई देती हैं। यहाँ पर एक ओर हमें आदर्शवादी पात्र जैसे वंशीधर, अलगू चौधरी मिलते हैं, वहीं दूसरी ओर यथार्थवादी पात्रों जैसे हल्कू, घीसू, माधव आदि से भी हमारा सामना होता है। इस प्रकार का संतुलन प्रेमचन्द के साहित्य को व्यापक और प्रभावशाली बनाता है।

सामाजिक सुधार में पात्रों की भूमिका

प्रेमचन्द के पात्र केवल कहानी का हिस्सा नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के साधन हैं। अपनी विविध कहानियों के पात्रों के माध्यम से उन्होंने किसानों की समस्याओं को उजागर किया, स्त्री–शिक्षा और समानता का समर्थन किया, जाति–प्रथा की आलोचना की, और ईमानदारी और न्याय का आदर्श भी प्रस्तुत किया। उनके पात्रों के आंतरिक मनोभावों का सूक्ष्म चित्रण पाठकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करते हैं। यह मनोवैज्ञानिक गहराई उनकी कहानियों को जीवंत बनाती है।

समग्र महत्व

उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि–

- प्रेमचन्द के पात्र समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

- वे गरीबी, शोषण, भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों को उजागर करते हैं।
- उनके पात्र नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को स्थापित करते हैं।
- वे पाठकों को सोचने और समाज सुधार की प्रेरणा देते हैं।

प्रेमचन्द के पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता उनका यथार्थवाद है। वे जीवन से सीधे उठाए गए प्रतीत होते हैं। उनमें बनावटीपन नहीं है। उनके पात्र की विशेषता है कि वे–

- सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं।
- नैतिक संघर्षों से गुजरते हैं।
- गरीबी, शोषण और अन्याय का सामना करते हैं।
- मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत होते हैं।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में आदर्श और यथार्थ का एक श्रेष्ठ संतुलन स्थापित किया है। एक ओर वे समाज में आदर्श प्रस्तुत करते हैं, तो किसी अन्य स्थान पर कठोर यथार्थ का नग्न चित्रण भी करते हैं। आज के संदर्भ में प्रेमचन्द के पात्र आज भी प्रेमचन्द के पात्र प्रासंगिक हैं।

इसे इस बात से समझा जा सकता है कि समाज में किसान समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता अभी भी चुनौती हैं, और स्त्री–सशक्तिकरण की आवश्यकता आज भी है। इस प्रकार, उनके पात्र समय की सीमाओं को लांघकर सार्वकालिक बन गए हैं।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र भारतीय समाज का दर्पण हैं। वे केवल साहित्यिक चरित्र नहीं, बल्कि जीवंत मनुष्य हैं जिनकी पीड़ा, संघर्ष और संवेदनाएँ आज भी हमारे आसपास दिखाई देती हैं। प्रेमचन्द ने अपने पात्रों के माध्यम से सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण, जातिगत भेदभाव और नैतिक पतन को उजागर किया, साथ ही सत्य, ईमानदारी और मानवता का संदेश भी दिया। उनके पात्रों का महत्व इस बात में निहित है कि वे पाठकों को केवल मनोरंजन नहीं देते, बल्कि सोचने और समाज को बेहतर बनाने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। यही कारण है कि प्रेमचन्द का कथा–साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रभावशाली है जितना उनके समय में था।

संदर्भ

[1]. सिमोन, बी. (1949), द सेकेंड सेक्स, फ्रांस
[2]. दास, आर (2016), अनभाई, कम।
[3]. मुंशी प्रेमचन्द, गोदान (1936), गोदान, इलाहाबादः हंस प्रकाशन।
[4]. मुंशी प्रेमचन्द, गबन, गोदान इलाहाबादः हंस प्रकाशन।
[5]. मुंशी प्रेमचन्द मंगलसूत्र, अप्रकाशित, इलाहाबादः हंस प्रकाशन।
[6]. मुंशी प्रेमचन्द, गोयनका, के.के. (1962), प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड तीन) नई दिल्ली, साहित्य अकादमी।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 4, January 2026

Impact Factor: 7.67

[7]. खेतान, पी. (1990), स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पॉकेट बुक्स।

[8]. मुंशी प्रेमचन्द कहानी घर जमाई, पृ. 04.

[9]. मुंशी प्रेमचन्द कहानी सुभांगी, पृ. 10.

[10]. मुंशी प्रेमचन्द कहानी मुक्तिमार्ग, पृ. 13.

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-31092